रूपक, गुरु नानक के कदमों की रुहानी छाप

एपिसोड १८: सुमेरू (चेतना)

सुमेरु, चेतना, यह गुरु नानक के निडरता की गूंज है। निर्भय संत ने देवताओं और राक्षसों के पहाड़ों, और दुनिया की छत पर ज़ोर देकर कहा कि सिर्फ़ सर्वोच्च चेतना ही इलाही का केंद्र है।

जो तिस भावै सोई करसी किरत न मेटिआ जाई ॥
(राग गुजरी, गुरु नानक)

कुदरत को जो भाता है वह वही करती है उसकी कृत को कोई मिटा नहीं सकता।
(राग गुजरी, गुरु नानक)

गुरु नानक ने कहा कि सोच-विचार से किये कर्मों की अहमियत सर्वोत्तम है। अपने प्रयासों के फल से उदासीन रहकर ही मनुष्य में इत्तेफ़ाक का वास होता है।

गुरु नानक और भाई मरदाना ने कुछ समय ननकाना साहिब में
गुज़ारने के बाद वह अगली उदासी के लिये रवाना हुए जो लगभग पंद्रह सौ सत्रह ईस्वी में शुरू हुई। यह सफ़र उन्हें उत्तरी हिमालय के इलाके में ले गया।

गुरु नानक और भाई मरदाना ने तलवंडी, जो अब ननकाना साहिब है, से लाहौर, कीरतपुर, ज्वाला जी, बैजनाथ और पार्वती वादी का सफ़र किया। इससे आगे उन्होंने स्पीति वादी और शिपकी दर्रे से सफ़र करते हुये तिब्बती पठार पर चढ़ाई की और सापरांग से गुज़रते हुये कैलाश पर्वत की यात्रा की। कैलाश पर्वत से उन्होंने पैंगोंग झील के साथ-साथ सफ़र किया और लेह पहुंच गये। लेह से उन्होंने स्कर्दू, कारगिल, मटन और श्रीनगर का सफ़र किया। पहले उन्होंने ननकाना साहिब से लाहौर की यात्रा की।

गुरु नानक के पदचिन्हों पर अब हम ननकाना साहिब से लाहौर जा रहे हैं।

लाहौर की उत्पत्ति महाकाव्य रामायण के समय से जुड़ी हुई है। लाहौर के हुक्मरान समय के साथ बदलते रहे हैं जो हिंदू, मुस्लिम, सिख और ब्रिटिश रहे। इस समय लाहौर पाकिस्तान के पंजाब सूबे की राजधानी है।

जब गुरु नानक लाहौर आये तो यहां लोदी वंश का शासन था।

अब हम लाहौर के अंदरून शहर में चौहट्टा बाज़ार जा रहे हैं।

गुरु नानक और भाई मरदाना ने लाहौर में रावी नदी के किनारे पर क़ियाम किया। वह अपने रोज़ाना दस्तूर के मुताबिक बाणी गायन कर रहे थे तो उनके विस्मयकारी शब्दों ने माल महकमे के अफ़सर दुनी चंद के दिल को छू लिया। उसने दोनों को चौहट्टा बाज़ार स्थित अपने आवास पर आमंत्रित किया।

दुनी चंद को अपनी दौलत पर गर्व था। उसने बहुत गर्व से अपनी अमीरी का दिखावा करते हुये बताया कि झंडों से सजा हुआ आलीशान घर उसका है। दुनी चंद को पदार्थ की लालसा से मुक्त करने के लिये, गुरु नानक ने उसकी आलोचनावादी सोच को जगाया। उन्होंने दुनी चंद को एक सुई उपहार के रूप में दी और कहा कि इसे संभाल कर रखे और मरने के बाद अपने साथ लेकर जाये। दुनी चंद को गहरे संदेश की समझ आ गई कि जमाखोरी व्यर्थ है और मौत के बाद कुछ भी साथ नहीं जाने वाला। इसलिये ज़रूरतमंदों में दौलत बांटने से रूहानी रुतबा कमाया जा सकता है जो सबसे महत्वपूर्ण संपत्ति है। गुरु नानक ने गा कर तफ्सील से समझाया।

साह मरहि संचहि माइआ दाम ॥
मै धन दीजै हरि अंमृत नाम ॥
(राग गौड़ी, गुरु नानक)

दौलतमंद, दौलत और संपत्ति जमा करने के बाद भी मर जायेगा।
मुझे अमृत रूपी सोच-विचार की दौलत से आशीर्वाद दो।
(राग गौड़ी, गुरु नानक)

गुरु नानक ने दुनी चंद को अहसास कराया कि निस्वार्थता ही एकमात्र हक़ीक़ी मुनाफ़ा है जबकि बाकी धन-दौलत अहंकार को बुलंद करने की गुंज़ाइश पैदा करता है।

अमरदीप सिंह: यह गुरुद्वारा लाहौर के अंदरून शहर की तंग गलियों में 'सेठ' दुनी चंद के पुराने निवास वाले स्थान पर बना है।

दुनी चंद ने गुरु नानक को श्राद्ध करने का निमंत्रण दिया जो मृत पूर्वजों को श्रद्धांजलि देने के कर्मकांड के तौर पर पुजारी तबके की ख़ातिरदारी से किया जाता है। श्राद्ध संस्कृत शब्द 'श्रद्धा' से बना है। गुरु नानक ने कहा कि पूर्वजों को सम्मान देने के लिये उनके जीवित रहते हुये सम्मान किया जाना चाहिए। ज़्यादा तफ्सील देने के लिये गुरु नानक ने गाया,

सभ संजम रहे सिआणपा ॥
मेरा प्रभ सभ किछ जाणदा ॥
प्रगट प्रताप वरताइओ सभ लोक करै जैकार जीउ ॥
(सिरी राग, गुरु नानक)

सभी संयम चतुर चालाकियां हैं।
मेरा हाज़रा-हज़ूर आप ज्ञाता है।
सख्त कर्मकांड सिर्फ चतुर चालाकियां हैं।
(सिरी राग, गुरु नानक)

यह ग़लत-फ़हमी है कि कर्मकांड निभाने वाले कर्मों से कोई गुणवान हो जाता है और अपनी ज़िम्मेदारियां पूरी कर लेता है। गुरु नानक ने कहा कि समाज को फ़रेब से धोखा दिया जा सकता है लेकिन मनुष्य की अपनी सुरति को, उसके कर्मों के पीछे के इरादों का पता होता है।

गुरु नानक का यह गहन, दलीलमंद और कायनाती फ़लसफ़ा विभिन्न पृष्ठभूमि के लोगों के दिलों को छूता है।

हम अब लाहौर किले के संरक्षक अंजुम दारा से मिल रहे हैं। उन्होंने पुरातत्व विज्ञान की पढ़ाई की है और पंजाब की सांझी संस्कृति से परिचित हैं, जब गुरु नानक की हिंदुओं, मुसलमानों और सिखों के बीच एक समान मान्यता थी।

विसुए चसिआ घड़ीआ पहरा थिती वारी माह होआ ॥
सूरज एको रुत अनेक ॥
नानक करते के केते वेस ॥
(राग आसा, गुरु नानक)

पल, घड़ियां, पहर, तिथि, दिन और महीने
अनेक मौसम एक सूरज से पैदा होते हैं।
नानक ने कहा कि इस तरह कर्ता एक है पर उसके अनेक रूप हैं।
(राग आसा, गुरु नानक)

अंजुम दारा: यह जो सबद हैं, गुरु ग्रंथ साहिब के अंदर, इनका मकसद है कि सेकंड, घंटे, हफ़्ते, महीने, यह सभी एक सूर्य से जुड़े हुये हैं। उस सूरज की गर्दिश के साथ हर चीज़ जुड़ी है। जैसे यह बाबा गुरु नानक महाराज ने कहा है कि वहदत की जाति, अल्लाह की जाति, ईश्वर की जाति, वाहेगुरु, इकाई से जुड़ी चीज़ें हैं। सभी दीन भी उसमें से निकले हैं, सभी खेल विभिन्न धर्मों के इंसानों के बनाये हुये हैं। उसमें एक ओर, भगत कबीर का सबद है कि, एक मंदिर के दस दरवाज़े हैं जिनमें करतार का वास है, अपने-अपने धर्म के नियमों के मुताबिक संसार अलग-अलग शक्लों की पूजा करता है। हर कोई अपने-अपने दरवाज़े से दाख़िल होता है, वह यही समझता है कि यही दरवाज़ा है जो मंदिर में जाता है, जो मस्जिद में जाता है, जो गुरुद्वारे को जाता है। उन्हें यह नहीं पता कि दरवाज़े दस हैं, अंदर एक ही शख़्सियत है और वहदत है। इसका मतलब है कि जब नानक प्रकट हुये, उस समय जाति-पाती, ऊंच-नीच, हिंदू-ब्राह्मणों और मुल्लाओं की मज़हब का इस्तेमाल करने की तरकीबें थी। बाबा जी ने कहा था कि यह अज्ञानता के कारण तमाम अंधेरा है। इंसानियत को रास्ता दिखाने के लिये किसी रौशनी की ज़रूरत है, किसी हिदायत की ज़रूरत है।

गुरु नानक और भाई मरदाना ने लाहौर से शिवालिक की पहाड़ियों में सतलुज नदी के पूर्वी किनारे पर कीरतपुर का सफ़र किया।

मौजूदा दौर में सियासी कारणों से इंडिया-पाकिस्तान सरहद को कुछ निश्चित नाकों से ही पार किया जा सकता है। इसलिये हम वाघा नाका से इंडिया जा रहे हैं और कीरतपुर के पास पहाड़ी के शिखर पर बने पीर बुढ़न शाह की दरगाह से गुरु नानक के पदचिन्हों पर अपना सफ़र आगे बढ़ायेंगे।

जब गुरु नानक इस इलाके में आये तो शिवालिक पहाड़ियों में घना जंगल था। पहाड़ी की चोटी पर गुरु नानक के आगमन का ज़िक्र पुरानी 'जन्मसाखियों' में नहीं मिलता। इस वृतांत को स्वीकार किया जाता है क्योंकि ऐसा कहा जाता है कि गुरु हरगोबिंद स्वयं गुरु नानक की याद में इस स्थान पर आये थे।

ज़ुबानी परंपरा में दर्ज है कि इस पहाड़ी के शिख़र पर पीर बुढ़न शाह नाम के मुसलमान संत, बकरियों का एक झुंड पालते थे जिनकी रक्षा उनका पालतू शेर करता था। पीर बुढ़न शाह ने गुरु नानक और भाई मरदाना की मेज़बानी की और उन्हें बकरी का दूध पेश किया।

शेर बहादुरी की नुमाइंदगी करता है, बकरी विनम्रता की नुमाइंदगी करती है, और दूध ख़ुराक के स्रोत की नुमाइंदगी करता है। मेरी विनम्र समझ के मुताबिक, यह रूपक के तौर पर बयान करते हैं कि विनम्रता की हिमायत में बैर को काबू करना ही सच्ची बहादुरी है जो ख़ुराक के तौर पर रूह की सेवा करती है।

पीर बुढ़न शाह की दरगाह से थोड़ी दूरी पर गुरु नानक की कीरतपुर आगमन की याद में गुरुद्वारा चरण कमल बना हुआ है।

अमरदीप सिंह: गुरु नानक की फ़कीर बुढ़न शाह के साथ मुलाकात की याद में गुरुद्वारा चरण कमल बना हुआ है।

गुरु नानक और भाई मरदाना ने कीरतपुर से ज्वाला जी का सफ़र किया।

गुरु नानक के पदचिन्हों पर अब हम कीरतपुर से हिमाचल प्रदेश के शहर ज्वालाजी मे ज्वालामुखी मंदिर जा रहे हैं।

यह मंदिर हिंदू धर्म के शक्ति मत के इक्यावन शक्ति पीठों में शामिल है। ज्वालामुखी मंदिर वाली जगह पर भगवान शिव की मृत जीवन-साथी पार्वती की कटी हुई जीभ गिरी थी।

इस प्राचीन मंदिर में 'ज्वाला' की पूजा होती है। ऐसा माना जाता है कि यह ज्योति सदियों से जल रही है।

गुरु नानक के ज्वालामुखी मंदिर आने का ज़िक्र 'भाई मनी सिंह वाली जन्मसाखी में मिलता है।

गुरु नानक के इस स्थान पर आने की श्रद्धा में महाराजा खड़क सिंह ने अट्ठारह सौ चालीस ईस्वी में ज्वालामुखी मंदिर के गुंबद पर सोने की झाल चढ़वाई थी। वह महाराजा रणजीत सिंह के सुपुत्र थे जिन्हे शेरे-पंजाब कहा जा जाता है।

कई मज़हबों के दस्तूर में ज्वाला की पूजा, इस की अंधेरे में रौशनी करने की शक्ति के तौर पर की जाती है। मैं समझता हूँ कि यह ज्ञान की मशाल से मन को रौशन करने की प्रतीकात्मक नुमाइंदगी है। लेकिन, इस अंदरूनी तब्दीली से रौशन-ख़्याली वाले असल भाव को नज़रअंदाज़ करके महज़ कर्मकांड वाली आराधना तक ही सीमित कर दिया गया है।

कीरत करम कार निज संदा ॥
अंतर रवतौ राज रविंदा ॥
(राग प्रभाती, गुरु नानक)

मेरा कर्म रोज़ाना विचार करना है।
सुरति का वास मेरे अंदर है जैसे चमक, सूरज में बसती है।
(राग प्रभाती, गुरु नानक)

गुरु नानक ने कहा कि उन्होंने सोच-विचार को रोज़ाना अभ्यास का हिस्सा बना लिया है क्योंकि विवेक की ज्वाला इंसान के अंदर बसती है।

गुरु नानक और भाई मरदाना ने ज्वालाजी से बैजनाथ का सफ़र किया।

गुरु नानक के पदचिन्हों पर चलते हुये अब हम ज्वालाजी से बैजनाथ जा रहे हैं।

प्राचीन शहर बैजनाथ धौलाधार पहाड़ियों की तलहटी में बसा है। ऐतिहासिक रूप से यह कश्मीर और पंजाब से तिब्बत तक के व्यापार मार्ग पर एक महत्वपूर्ण शहर था । गुरु नानक के दौर में इस इलाके में कई ख़ुशहाल मंदिर थे जो दौलतमंद हुक्मरान शाही ख़ानदान ने बनवाये थे।

हम ऐतिहासिक बैजनाथ मंदिर जा रहे हैं जो भगवान शिव को समर्पित है और उनकी नुमाइंदगी उस्ताद वैद के तौर पर की गई है। हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा ज़िले के इस मंदिर को हिंदू धर्म का महत्वपूर्ण तीर्थ स्थल माना जाता था।

बैजनाथ का पहला नाम कीड़ग्राम था जो 'कीड़' और 'ग्राम' शब्दों के मेल से बना है। 'ग्राम' शब्द का अर्थ बस्ती है लेकिन 'कीड़' शब्द के अर्थ के बारे में राय अलग-अलग है। कुछ ग्रंथों में हवाला 'किरता' कबीला से है जो कभी यहां राज करता था। 'विलायतवाली' जन्मसाखी के अनुसार 'कीड़' का अर्थ कीड़ा है।

नदीआ विच टिबे देखाले थली करे असगाह ॥
कीड़ा थाप देइ पातिसाही लसकर करे सुआह ॥
(राग माझ, गुरु नानक)

सर्वव्यापी नदियों में टीले उभार सकता है और रेगिस्तानों को अथाह समन्दर में बदल सकता है।
कायनाती ऊर्जा कीड़े को पातशाह बना सकती है और सेनाओं को राख कर सकती है।
(राग माझ, गुरु नानक)

गुरु नानक ने कहा कि कायनाती ऊर्जा कीड़े को भी शक्तिशाली हुक्मरान बना सकती है और सेनाओं को राख में बदल सकती है। छोटा या बड़ा होना तो व्यर्थ है। कुदरत के हर पहलू का मान-सम्मान करना सहअस्तित्व के लिये ज़रूरी है। गुरु नानक के कीड़े के बारे में सबद से मैंने यह सीख पायी है।

गुरु नानक और भाई मरदाना ने बैजनाथ से पार्वती वादी का सफ़र किया जो मणिकर्ण गांव का इलाका है।

गुरु नानक के पदचिन्हों पर अब हम बैजनाथ से पार्वती वादी में मणिकर्ण जा रहे हैं जहां पार्वती नदी के किनारे पर एक गर्म पानी के झरने के पास एक मंदिर और एक गुरुद्वारा है।

बाबा नारायण हरि ने उन्नीस सौ चालीस ईस्वी में गुरु नानक के हिमाचल इलाके में आने की याद में मणिकर्ण साहिब गुरुद्वारा बनाया था। गुरु नानक तिब्बत जाते हुये इस इलाके में आये थे।

यह गुरुद्वारा गुरु नानक के बारे में ज़ुबानी-कलामी चली आ रही एक कथा के कारण मशहूर है जिसका ज़िक्र पुरानी जन्मसाखियों में नहीं मिलता। इस कथा के मुताबिक मणिकर्ण गांव में गुरु नानक को खाना पकाने के लिये कोई लकड़ी नहीं मिली तो उन्होंने एक पत्थर उठाया और नीचे से गर्म पानी का एक झरना उत्पन्न कर लिया। जब भाई मरदाना ने बेली हुई रोटी और दाल को गर्म पानी के झरने में पकने के लिये डाला तो वे डूब गईं। गुरु नानक की सलाह पर, भाई मरदाना ने ऐलान किया कि वह ताउम्र परमात्मा को समर्पित रहेंगे। इसके बाद पका हुआ खाना तैरने लगा।

यह कथा पहाड़ी शैली की पेंटिंग में दर्ज है जो दिल्ली के राष्ट्रीय संग्रहालय के 'जन्मसाखी' कला संग्रह में शामिल है।

ऐसी कथाओं के बारे में सोचकर मैं हैरान होता हूँ कि क्या हम गुरु नानक के फ़लसफ़े के गहरे संदेश को समझने में असमर्थत हैं जो हम अलौकिक वाक्यात का महिमामंडन करते हैं। मेरी विनम्र समझ के अनुसार, भोजन का डूबना अहंकारी सोच के कारण होने वाले दुखों मे डूबने की नुमाइंदगी करता है और भोजन का तैरना कुदरत का हुक्म मानने से होते बुलंद हौसले की पेशकारी है।

हुकमै अंदर सभ को बाहर हुकम न कोइ ॥
नानक हुकमै जे बुझै त हउमै कहै न कोइ ॥
(जप, गुरु नानक)

सब कुछ कुदरत के हुकम में है, उसके हुकम से बाहर कुछ नहीं।
नानक ने फ़रमाया, जो उसके हुकम को समझता है वह अहंकार के बोल नहीं बोलता।
(जप, गुरु नानक)

गुरु नानक और भाई मरदाना ने पार्वती वादी से सपिती वादी से होते हुये शिपकी दर्रे को पार किया और तिब्बत में सापरांग की चढ़ाई पर चढ़े।

गुरु नानक के पदचिन्हों पर चलते हुये अब हम मणिकर्ण से सपिती वादी जा रहे हैं।

गुरु नानक और भाई मरदाना ने इस मुश्किल इलाके में सफ़र किया जो बंजर पहाड़ों से घिरा हुआ है। भारी बर्फ़बारी होने के कारण कुदरती नज़ारों वाली इस वादी का रास्ता साल के चार महीने के लिये खुलता है और बाकी समय यह इलाका पहुंच से बाहर रहता है। स्पीति वादी में गुरु नानक की कोई भौतिक यादगार नहीं है।

मौजूदा दौर में सियासी कारणों से इंडिया-तिब्बत सरहद पार करना मुमकिन नहीं है। इसलिये हम चीन के रास्ते तिब्बत के पठार से गुरु नानक के पदचिन्हों पर सफ़र आगे बढ़ा रहे हैं।

अमरदीप सिंह: औसतन सौलह हज़ार मीटर की ऊंचाई पर तिब्बत को दुनिया की छत के रूप में जाना जाता है। यहां का वातावरण रूहानी अहसास बुलंद करता है लेकिन इस इलाके की ऊंचाई, तेज़ आंधियां और हल्की हवा इसे कठिन क्षेत्र बना देतीं हैं।

बॉन तिब्बत के लोगों का प्राचीन स्थानीय मज़हब था जो सर्वात्मवादी और तंत्रवादी था। इस इलाके में आठवीं सदी के दौरान बौद्ध धर्म इंडिया से आया था। बौद्ध और हिन्दू धर्म के बॉन परंपराओं के मिश्रण से तिब्बती बुद्ध मत का विकास हुआ जो एक निराला दस्तूर है।

तिब्बती पठार पर सफ़र करते हुये हम सतलुज नदी की वादी से ऐतिहासिक शहर सापरांग जा रहे हैं। यह शहर दसवीं शताब्दी में गुगी सल्तनत ने बसाया और यहां के लोग बौद्ध धर्म को मानते थे।

अमरदीप सिंह: स्पीति वादी से गुरु नानक और भाई मरदाना तिब्बत के सापरांग इलाके में पहुंचे जो गुगी सल्तनत में था। जब गुरु नानक इस इलाके में आये, तो इन गुफ़ाओं में रहने वाली बड़ी आबादी तिब्बती बौद्ध धर्म को मानती थी।

गुगी सल्तनत की आबादी पिरामिड रूपी पहाड़ी चोटियों पर बसी थी जहां बहु-मंज़िला बस्तियां थी जिनके गलियारों, गुफ़ायें और खिड़कियां प्राचीन समुद्र के पत्थरी तलछट से नक्काशी गई थी। सबसे नीचे आम नागरिकों का आवास था। पहली मंजिल पर मंदिर और भिक्षुओं के आवासीय इमारतें थी। उससे ऊपर वाली मंज़िल पर शाही परिवार के सदस्य रहते थे। सबसे ऊंची स्थान पर शाही महल था। यह दिलचस्प है कि इस सल्तनत की शानदार सभ्यता सत्रहवीं शताब्दी में रहस्यमय तरीके से गायब हो गई।

जब गुरु नानक यहां आये तो यह इलाका विकास के तजुर्बे से गुज़र रहा था जो विभिन्न मान्यताओं और तहज़ीबों के मिलाप का नतीजा था।

पंखी होइ कै जे भवा सै असमानी जाउ ॥
नदरी किसै न आवऊ ना किछ पीआ न खाउ ॥
भी तेरी कीमत ना पवै हउ केवड आखा नाउ ॥
(सिरी राग, गुरु नानक)

अगर मैं पक्षी होता अगर मैं पक्षी होता तो मैं अनंत आकाश में उड़ जाता।
अगर मैं अदृश्य होता ना मुझे भूख लगती है और ना प्यास।
तब भी मैं तुम्हारी कीमत का अंदाज़ा नहीं लगा सकता। तो मैं आपकी महिमा कैसे ब्यान कर सकता हूँ?
(सिरी राग, गुरु नानक)

गुरु नानक ने कहा कि अगर कोई अलौकिक ताकत को हासिल करके ऊंची उड़ान भरता है तो भी आत्म सोच-विचार के मुकाबले उसकी कीमत कम है। आत्म सोच-विचार की ताकत मनुष्य को उसके स्वयं का अहसास करवाती है।

गुरु नानक और भाई मरदाना ने सापरांग से पूर्व में कैलाश पर्वत का सफ़र किया।

गुरु नानक के पदचिन्हों पर अब हम तिब्बती पठार पर कैलाश पर्वत जा रहे हैं।

अमरदीप सिंह: समुद्र तल से इक्कीस हज़ार आठ सौ फीट की ऊंचाई पर कैलाश पर्वत तिब्बती पठार से निकलते मंदिर के गुंबद जैसा लगता है। कैलाश को 'सुमेरु' भी कहा जाता है। 'मेरु' अभौतिक अस्तित्व के केंद्र को पेश करता है और 'सु' का अर्थ सर्वोत्तम है। कैलाश पर्वत को ग़ैर-भौतिक अस्तित्व का केंद्र शायद इसलिये माना जाता है क्योंकि इस पहाड़ से एशियाई महाद्वीप की चार प्रमुख नदियां निकलती हैं। ये नदियां ब्रह्मपुत्र, सतलुज, सिंधु और गंगा का स्रोत मानी जाने वाली करनाली हैं।

सदियों से हिंदू, बौद्ध, जैन और बॉन तीर्थयात्री अपनी-अपनी मान्यताओं के अनुसार कैलाश पर्वत की परिक्रमा करते रहे हैं। हिंदू तो कैलाश पर्वत को भगवान शिव का निवास मानते हैं।

गुरु नानक की साखी के पहले लेखक भाई गुरदास ने उनकी कैलाश पर्वत की यात्रा का विवरण दिया है।

फिरि जाइ चड़्हिआ सुमेर परि सिधि मंडली द्रसटी आई ॥
(भाई गुरदास)

फिर वे सुमेर गये, जहां उन्हें सिद्धों की मंडली दिखाई दी।
(भाई गुरदास)

संस्कृत के शब्द 'सिद्ध' का प्रयोग उन लोगों के लिये किया जाता है जिन्होंने उच्च स्तर की हक़ीक़ी और रूहानी काबिलियत हासिल कर ली है। गुरु नानक का 'सिद्धों' के साथ विभिन्न स्थानों पर गोष्ट 'सिद्ध गोष्ट' शीर्षक के तहत गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज किया गया है।

कैलाश पर्वत पर गुरु नानक की मुलाकात 'सिद्धों' से हुई, जिन्होंने उन्हें रूहानी गोष्ट के लिये आमंत्रित किया। 'सिद्ध' इलाही का अहसास करने के लिये समाज और पारिवारिक जीवन से दूर रहना पसंद करते हैं, जबकि गुरु नानक का मानना है कि समाज और पारिवारिक ज़िम्मेदारियों को पूरा करते हुये भी रूहानी ऊंचाइयों को हासिल किया जा सकता है। गुरु ग्रंथ साहिब में 'सिद्ध गोष्ट' का पहला शबद अंकित करता है कि संवाद शुरू करने से पहले गुरु नानक और 'सिद्धों' ने एक दूसरे को नमन किया।

गुरु नानक ज्ञान की आरज़ूमंदी और उसको बांटने के समर्थक थे। उन्होंने 'सिद्धों' से सवाल किया कि जब उनकी हासिल की गई रूहानी उत्कृष्टता को बांटने से समाज का भला हो सकता है तो वे अपने-आप को समाज से अलग क्यों रखते हैं।

सिध सभा करि आसण बैठे संत सभा जैकारो ॥
तिस आगै रहरास हमारी साचा अपर अपारो ॥
मसतक काट धरी तिस आगै तन मन आगै देउ ॥
नानक संत मिलै सच पाईऐ सहज भाइ जस लेउ ॥
किआ भवीऐ सच सूचा होइ ॥
साच सबद बिन मुकत न कोइ ॥
(राग रामकली, गुरु नानक)

सिद्धों की हाज़री में जुड़ी संतों की संगत में जयकारे गूंजते हैं।
हम सजदा करते हैं सच्चे, अनंत, अपार को।
मैं अपने अहंकार तन और मन का निवारण करता हूँ।
नानक ने कहा कि नम्र लोगों की संगत में सत्य नसीब होता है स्वयं को कबूल कर के।
इधर-उधर भटकने का कोई लाभ नहीं है। निर्मलता सिर्फ़ सच के रास्ते से मिलती है।
विवेक को समझे बिना रूहानी मुक्ति नहीं मिल सकती।
(राग रामकली, गुरु नानक)

गुरु नानक ने कहा कि उन लोगों की संगत में मोक्ष मिलता है जिन्होंने अपनी लालसाओं को तृप्त कर लिया है और अपने कुदरती ज्ञान से रूहानी फ़ितरत बना ली है।

हम अब मानसरोवर झील जा रहे हैं जो कैलाश पर्वत के बहुत करीब है।

अमरदीप सिंह: मानसरोवर झील समुद्र तल से पंद्रह हज़ार फीट की ऊंचाई पर स्थित विश्व की सबसे ऊँची निर्मल पानी की झील है। मानसरोवर दो शब्दों के जोड़ से बना है 'मानस' और 'सरोवर'। 'मानस' का अर्थ है मन और 'सरोवर' का अर्थ है झील। झील का शुद्ध और ठंडा पानी, अमन, चैन और दिव्यता का अहसास जगाता है। इसीलिये ग्रंथों में मानसरोवर ताल को मानवीय सदगुणों की कामना से जोड़ा गया है।

प्राचीन ग्रंथों में ज़िक्र है कि मानसरोवर झील में सफेद हंस रहते हैं और उनका ध्यान शुद्ध पानी में छिपे मोतियों को खोजने पर लगा रहता है। इस मिथक के साथ मुझे गुरु नानक का शबद याद आता है।

गुरु सरवरु हम हंस पिआरे ॥
सागर महि रतन लाल बहु सारे ॥
मोती माणक हीरा हरि जसु गावत मनु तनु भीना हे ॥
(राग रामकली, गुरु नानक)

रूहानी विवेक ही पवित्र सरोवर है और हम प्यारे के सरोवर में हंस हैं।
दुनियादारी के समुन्द्र में बहुत सारे फ़लसफ़े है जो बेशकीमती रत्नों जैसे है।
रूहानी विवेक तो मोतियों मणिकों और हीरों के समान है जिससे मन और तन इलाही कृपा से सराबोर हो जाता है।
(राग रामकली, गुरु नानक)

गुरु नानक ने कहा कि अज्ञानता से बाहर निकलने के लिये मार्गदर्शक शक्ति पवित्र सरोवर है और शैक्षिक अवसरों की तलाश में समर्पित हंस जिज्ञासु हैं। जो नायाब हीरों के समान होते हैं।

हिंदू, बौद्ध, जैन और बॉन, कैलाश पर्वत की यात्रा के दौरान मानसरोवर झील की परिक्रमा करते हैं। उनका विश्वास है कि मानसरोवर के पानी में निवारण शक्ति है जिसके कारण इस ताल में डुबकी लगाने से रूहों के पाप और जिस्मों के मर्ज़ दूर हो जाते हैं।

हम कैलाश पर्वत और मानसरोवर ताल के पास राक्षस झील जा रहे हैं।

अमरदीप सिंह: समुद्र तल से चौदह हज़ार फीट की ऊंचाई पर यह राक्षस झील, कैलाश पर्वत और मानसरोवर झील के करीब है। राक्षस झील दो शब्दों का मेल है, 'राक्षस' का अर्थ है शैतान और 'ताल' का अर्थ है सरोवर। मानसरोवर झील के विपरीत, राक्षस झील का पानी काला और खारा है। इस पानी में कोई जीव नहीं रहता। इसी कारण ग्रंथों में राक्षस ताल का ज़िक्र मानवीय मन के अवगुणों की रूपक के तौर पर नुमाइंदगी के लिये किया जाता है।

यह माना जाता है कि इस झील को देखने से दुर्भाग्य और दुख आ पड़ते हैं। कैलाश पर्वत और मानसरोवर झील की यात्रा करने वाले ज़ियारती राक्षस झील को अशुभ मानते हैं।

गावीऐ सुणीऐ मन रखीऐ भाउ ॥
दुख परहर सुख घर लै जाइ ॥
(जप गुरु नानक)

गाओ-सुनो और चेतना में रूहानी भाव बसा लो।
आपका दुख ख़त्म हो जायेगा और सुख घर आयेगा।
(जप गुरु नानक)

मिथकों में कुछ भौतिक तत्व राक्षसी ताकत के रूप में दर्ज होते हैं जो दुख देते हैं। गुरु नानक ने कहा कि मनुष्य के अंदर बसे विकार ही राक्षस हैं। इनसे छुटकारा पाने के लिये सकारात्मक इरादों का होना, इनकी शरण लेना और उन के साथ एक होना ज़रूरी है, जिससे चैन और ख़ुशी मिलती है।

गुरु नानक और भाई मरदाना ने कैलाश पर्वत से उत्तर में पैंगोंग झील का सफ़र किया और लद्दाख होते हुये लेह पहुंच गये।

हम तिब्बत में गुरु नानक के पदचिन्हों पर चलकर इंडिया-तिब्बत सीमा पर पैंगोंग झील जा रहे हैं जो इंडो-तिब्तियन सरहद पर है।

अमरदीप सिंह: पैंगोंग झील समुद्र से चौदह हज़ार फीट की ऊंचाई पर एक सौ छत्तीस किलोमीटर लंबी ताल है जो भारत के लद्दाख और तिब्बत में बहती है। गुरु नानक और भाई मरदाना पोंगोंग झील के इलाके से गुज़रते हुये तिब्बत से रवाना हुये।

पोंगोंग झील के चारों ओर सफ़र करते हुये गुरु नानक और भाई मरदाना ने लद्दाख के शहर लेह की यात्रा की।

मौजूदा दौर में सियासी कारणों से इंडो-तिब्तियन सरहद पार करना मुमकिन नहीं है। इसलिये हम चीन से हवाई जहाज़ द्वारा भारत जा रहे हैं और लेह से गुरु नानक के पदचिन्हों पर अपना सफ़र आगे बढ़ायेंगे।

लेह इंडिया के लद्दाख की राजधानी है। इस इलाके में तिब्बती बौद्ध मत का बोलबाला है।

तिब्बती भाषा में 'रिनपोचे' का अर्थ कीमती रत्न होता है। यह विशेषण रूहानी अधिकार वाले व्यक्ति के सम्मान में लगाया जाता है। लद्दाख में गुरु नानक को रिनपोचे नानक कहा जाता है।

हम गुरुद्वारा दातुन साहिब जा रहे हैं जो जामा मस्जिद के पास बीसवीं शताब्दी में बनाया गया था। यह गुरु नानक के लेह आगमन की याद में बनाया गया है। इस स्थान से संबंधित वृतांत का ज़िक्र किसी भी पुरानी 'जन्मसाखी' में नहीं मिलता है। इस गुरुद्वारे की पट्टी पर लिखा है कि गुरु नानक ने इस स्थान पर दातुन की कलम लगाई थी।

लद्दाख के स्थानीय रिवाज़ के मुताबिक यह दरख्त सतारहवीं शताब्दी में सतागसंग रसपा ने लगाया जो हेमिस विहार के संस्थापक और प्रमुख लामा थे। ऐसा कहा जाता है कि राजा सेंगेले नामग्याल ने इस शहर के केंद्र में पेड़ लगाने के लिये यह जगह चुनी थी, जो स्वयं बौद्ध धर्म के अनुयायी थे।

यह अस्पष्ट है कि इस पेड़ से गुरु नानक का संबंध कैसे और कब जुड़ा।

हम अब गुरुद्वारा पत्थर साहिब जा रहे हैं जो लेह से बीस किलोमीटर दूर लेह-निमू सड़क पर है। पहले इस गुरुद्वारे वाली जगह पर बड़ा सा पत्थर होता था जिस पर स्थानीय बौद्ध अपने पारंपरिक बौद्ध झंडों के साथ पूजा करते थे।

(कीर्तन)

जब उन्नीस सौ सत्तर के दशक के मध्य में लेह-नीमू सड़क बन रही थी, तब भारतीय फ़ौज की बॉर्डर रोडज़ ऑर्गेनाइज़ेशन ने स्थानीय लोगों की भावनाओं का सम्मान करते हुये उस पत्थर को यथावत रखने का फ़ैसला किया। बाद में सड़क निर्माण की उस परियोजना में तैनात एक सिख फ़ौजी ने दावा किया कि उसने सपना देखा है कि गुरु नानक ने इस बड़े पत्थर को स्वयं पविलिकृत किया था। इसी से गुरुद्वारा पत्थर साहिब की शुरुआत हुई। उसके बाद इस स्थान का लगातार विस्तार होता गया और इसका इंतज़ाम इंडिया की फ़ौज के पास है। इस स्थान से जोड़े गये वृतांत का 'जन्मसाखियों' में कोई हवाला नहीं मिलता इसके अनुसार, पास के पहाड़ पर एक राक्षस रहता था जिसने बड़ा पत्थर गुरु नानक और भाई मरदाने के तरफ फैंका। वृतांत आगे बढ़ता है कि गुरु नानक के स्पर्श से पत्थर नरम हो गया और गुरु नानक की पीठ का निशान पत्थर पर पड़ गया।

गुरु नानक के फ़लसफ़े में किसी की सोच में बदलाव की छाप लगाने की शिद्दत है जो रूढ़िवादी से यथार्थवादी बना सकती है। अफसोस कि उनके संदेश की गहराई पर भौतिक परिवर्तन के साथ जुड़े वृतांत का पर्दा डल गया है । मेरी विनम्र राय के मुताबिक गुरु नानक का बेपनाह सम्मान उस समय होता है जब उनके फ़लसफ़े के संदेश का इरादा समझा जाता है।

हुकम सिञापै साह का पिआरे सच मिलै वडिआई होइ ॥
(राग सोरठि, गुरु नानक)

ओ प्यारे, जब मनुष्य कुदरत के हुकम को समझता है
तब वह सच से सराबोर हो जाता है और उसे सम्मान हासिल होता है।
(राग सोरठि, गुरु नानक)

गुरु नानक के दौर में दसवीं शताब्दी के संत भर्तृहरि नाथ के अनुयायी इस पहाड़ी इलाके में रहते थे क्योंकि वे इसे सृजनहार का अलौकिक निवास समझते थे। गोष्ट के दौरान गुरु नानक ने उन्हें याद करवाया कि पूरी दुनिया ही सृजनहार का अलौकिक निवास है।

अंतर बाहर अवर न कोइ ॥
जो तिस भावै सो फुन होइ ॥
सुण भरथर नानक कहै बीचार ॥
निरमल नाम मेरा आधार ॥
(राग आसा, गुरु नानक)

अंदर और बाहर उसके बिना कोई नहीं है।
जो प्रकृति को भाता है आखिर वही होता है।
सुन ओ भर्तृहरि जोगीनानक ने विचार करने के बाद कहा है
निर्मल विचार ही मेरा आधार है।
(राग आसा, गुरु नानक)

गुरु नानक और भाई मरदाना ने लेह से सिंधु नदी के किनारे स्कर्दू का सफ़र किया।

मौजूदा दौर में सियासी कारणों से इंडिया-पाकिस्तान की सरहद को इस इलाके से पार नहीं किया जा सकता। हम ने पंजाब से वाघा नाके को पार किया और पाकिस्तान के सूबे बाल्टिस्तान में इंडिया-पाकिस्तान की सीमा पर 'ज़ीरो पॉइंट' से गुरु नानक के पदचिन्हों पर अपना सफ़र आगे बढ़ायेंगे।

अमरदीप सिंह: हम पाकिस्तान के सूबे बल्तिस्तान के सुदूर पूर्वी इलाके में खड़े हैं जिसे 'ज़ीरो पॉइंट' कहा जाता है। यहां सिंधु नदी बहती है और हमारे पीछे की पहाड़ियां इंडिया में नुब्रा वादी में मिल जाती हैं। बल्तिस्तान में कभी कारगिल और स्कर्दू का इलाका आता था। यह अब दो आज़ाद मुल्कों, इंडिया और पाकिस्तान में विभाजित है। बल्तिस्तान में विविध मौसम हैं, कुदरती नज़ारे हैं और प्राचीन संस्कृतियां हैं। यहां सर्दी में कड़ाके की ठंड पड़ती है और गर्मियों में चिलचिलाती धूप। यहां ठंडे रेगिस्तान हैं और फूलों की रंगीन बहार खिलती हैं। यहां बर्फ से ढकी चोटियां हैं और ख़ुश्क पहाड़ हैं, जमे हुये ग्लेशियर हैं और बहती नदियां हैं। यह कुदरती नज़ारो से भरपुर इलाका रूहानीत सीखने की काबिलियत पंकट करता है।

गुरु नानक ने सभी को एक सूत्र में बांधने वाली ताकत की महिमा में गाया,

कोटि कोटी मेरी आरजा पवण पीअण अपिआउ ॥
चंद सूरज दुइ गुफै न देखा सुपनै सउण न थाउ ॥
भी तेरी कीमत ना पवै हउ केवड आखा नाउ ॥
(सिरी राग, गुरु नानक)

अगर मैं करोड़ों-करोड़ साल की ज़िंदगी हवा के सहारे गुज़ार दूँ।
अगर मैं गुफा में रहूँ कभी सूरज या चाँद ना देखूं और कभी सपनों में भी ना सोयूं।
तो भी मुझे तेरी कीमत का अंदाज़ा नहीं हो सकता। मैं आपकी बड़ाई की महिमा का वर्णन कैसे कर सकता हूँ?
(सिरी राग, गुरु नानक)

गुरु नानक के मुताबिक कुदरत के उपहारों को मात्रात्मक रूप देने वाले सबसे गहरे इज़हार भी सृजनहार की कीमत और तेज़ की थाह नहीं पा सकते।

गुरु नानक के पदचिन्हों पर अब हम 'ज़ीरो पॉइंट' से सिंधु नदी के किनारे पर सकरदु जा रहे हैं।

रास्ते में हमने मज़दूरों को सिंधु नदी पर पुल बनाते देखा। उनकी अद्भुत मेहनत को देखकर मुझे गुरु नानक का शबद याद आया।

नीत नीत घर बाँधीअहि जे रहणा होई ॥
(राग आसा काफी, गुरु नानक)

तू पल-पल माया जोड़ने में लगा है और तुम्हे इस क़ियाम के अस्थायी होने का अहसास नहीं।
(राग आसा काफी, गुरु नानक)

सृजनहारे की बनाई गई पृथ्वी पर मनुष्यों के द्वारा बनाये गये विभाजन को देखकर दुख होता है। आदरणीय संतों ने प्यार के पुल बनाने के लिये कड़ी मेहनत की ताकि लोगों में ऐकता बनी रहे लेकिन संकीर्ण सियासी

सोच लोगों में बेचैनी की बाड़ बनाते हैं। गुरु नानक ने याद दिलाया कि सांसारिक इच्छायें और भौतिक ख़जाने फ़ना हो जायेंगे और केवल प्यार के पुल रह जायेंगे।

सकरदु समुद्र तल से सात हज़ार तीन सौ फीट की ऊंचाई पर सिंधु नदी के किनारे बसा है और बल्तिस्तान की राजधानी है। यह काराकोरम और हिमालय की पहाड़ियों के बीच स्थित है, और मध्य एशिया को चीन से जोड़ने वाले प्राचीन व्यापार मार्ग पर है। यह दुनिया के सबसे ठंडे रेगिस्तानों में से एक है, जो पाकिस्तान में सकरदु से लेकर इंडिया में नुब्रा वादी तक फैला हुआ है।

ऐतिहासिक तौर पर बल्तिस्तान मज़हबी मिश्रण का इलका रहा है। पहाड़ों पर खुदे हुये बौद्ध शिलालेख इसके मिश्रित अतीत की गवाही देते हैं। इस समय यह इलाका इस्लामी है।

इन कठोर इलाकों में घूमते हुये, ऐसे पल आते हैं जब मैं निराशा की रेत में डूब जाता हूँ। उल्लास में, मैं ख़ुशी की पहाड़ियाँ चढ़ जाता हूँ और दुविधा में, मैं संदेह के जंगल में भटक जाता हूँ। मैं अक्सर सोचता हूँ कि गुरु नानक ने अपनी उदासियों के दौरान शारीरिक और जज़्बाती मुश्किलों का सामना कैसे किया होगा?

भूली भूली थल चड़ा थल चड़ डूगर जाउ ॥
बन महि भूली जे फिरा बिन गुर बूझ न पाउ ॥
नावहु भूली जे फिरा फिर फिर आवउ जाउ ॥
(सिरी राग, गुरु नानक)

अज्ञानवश मैं मरुस्थल में भटकता रहा। पठारों और पहाड़ों में भटकता रहा।
अज्ञानवश मैं जंगलों में भटकता रहा। मेरे को रूहानी मार्गदर्शन के बिना विवेक हासिल नहीं होगा।
अगर मैं सोच-विचार के बिना भटकता रहूँ तो मैं आवागमन के चक्कर में फंसा रहूँगा।
(सिरी राग, गुरु नानक)

गुरु नानक ने कहा कि अनुभवी मार्गदरशक ताकत, 'गुरु' के तौर पर शारीरिक और जज़्बाती मुश्किलों से उभरने में मदद करता है।

अमरदीप सिंह: हम सकरदु शहर में सिंधु नदी के पास सकरदु गुरुद्वारे के खंडहरों के सामने खड़े हैं। जब अट्ठारह सौ इकतालीस ईस्वी में बल्तिस्तान लाहौर दरबार का हिस्सा बना तो सिखों का यहां आना शुरू हो गया। उसके बाद सिख बिरादरी ने गुरु नानक के यहां आने की याद में गुरुद्वारा बनाया।

सन उन्नीस सौ सैंतालीस में सकरदु से नानक नामलेवा संगत के पलायन के बाद यह गुरुद्वारा खंडहर हो गया क्योंकि यहां के कठोर मौसम का असर इससे सहन नहीं हुआ।

रुत आईले सरस बसंत माहि ॥
रंग राते रवहि सि तेरै चाइ ॥
किस पूज चड़ावउ लगउ पाइ ॥
(राग बसंत, गुरु नानक)

वसंत का सबसे रोमांचक मौसम आ गया है।
प्यार के रंग में सराबोर इंसान को
इसके अलावा मैं किसकी पूजा करूं? किसके चरणों में प्रणाम करूं?
(राग बसंत, गुरु नानक)

बसंत की मिसाल देते हुये गुरु नानक ने सलाह दी है कि बंटवारे की ठंडक से बाहर आने और सौहार्दपूर्ण भविष्य की आशा जगाते रहो।

गुरु नानक और भाई मरदाना ने सकरदु से दक्षिण की ओर प्राचीन व्यापारिक मार्ग पर सफ़र किया और कारगिल पहुंचे।

मौजूदा दौर में सियासी कारणों से, इंडिया-पाकिस्तान सरहद को केवल कुछ तय नाकों से ही पार किया जा सकता है। इस लिये हम ने पंजाब के रास्ते वाघा नाका पार किया और कारगिल से गुरु नानक के पदचिन्हों पर अपना सफ़र आगे बढ़ा रहे हैं।

कारगिल इंडिया और पाकिस्तान के बीच 'लाइन ऑफ कंट्रोल' के पास सुरू नदी के किनारे बसा है।

गुरु नानक के दौर में यह सकरदु के बालती वंश की रियासत का हिस्सा था।

कारगिल में गुरु नानक की इस इलाके में आगमन की याद में गुरुद्वारा चरण कमल साहिब बनाया गया है। इस गुरुद्वारे का इंतज़ाम इंडियन फ़ौज संभालती है।

गुरु नानक और भाई मरदाना ने कारगिल से कश्मीर के जिला अनंतनाग में मटन का सफ़र किया।

गुरु नानक के पदचिन्हों पर अब हम कारगिल से मटन जा रहे हैं। हम आठवीं सदी के खंडहर हो चुके मार्तंड मंदिर जा रहे हैं जो 'सूर्य' देवता को समर्पित है।

अनंतनाग दो शब्दों का मेल है। 'अनंत' का अर्थ असीम है और 'नाग' के दो पौराणिक संदर्भ हैं, एक है भगवान शिव का नाग और दूसरा असंख्य झरनों की धरती । माना जाता है कि इन झरनों के पानी में दर्द निवारक तत्व हैं।

गुरु नानक के दौर में मार्तंड मंदिर हिंदूओं के लिये एक महत्वपूर्ण तीर्थ स्थल था।

मार्तण्ड मंदिर से कुछ फ़ासले पर हम मटन गांव जा रहे हैं।

मार्तंड मंदिर के कश्मीरी पुजारी तीर्थयात्रीयों के साथ बातचीत करके उनकी वंशावली तैयार करते थे। सियासी बेचैनी ने उन्नीस सौ नब्बे के दशक के दौरान कश्मीर में नस्ली विभाजन कर दिया जिसके कारण स्थानीय हिंदू आबादी को इस इलाके से बड़े पैमाने पर पलायन करना पड़ा। इनके बिखरने से मटन में परिवारों की वंशावलियां तैयार करने का दस्तूर ख़त्म हो गया है।

कभी मटन अपनी समृद्ध संस्कृति और मज़हबी जुड़ाव के लिये जाना जाता था। यहां हिंदू, मुस्लिम और सिखों का भाईचारा था।

यहां एक ही इमारत में मंदिर और गुरुद्वारा हैं। यह गुरुद्वारा गुरु नानक के मटन आगमन की याद में बनाया गया है।

गुरु नानक का यहां हिंदू पुजारी ब्रह्म दास के साथ गोष्ट हुआ था, जिसके पास ग्रंथों का भंडार था। उन्हे बातचीत शुरू करके अपने साहित्यिक ज्ञान का दिखावा करने के लिये जाना जाता था। विलायतवाली जन्मसाखी के मुताबिक गुरु नानक ने ब्रह्म दास से विचार करते हुये गायन किया,

आपीन्है आप साज आप पछाणिआ ॥
अंबर धरत विछोड़ चंदोआ ताणिआ ॥
विण थंम्मा गगन रहाइ सबद नीसाणिआ ॥
सूरज चंद उपाइ जोत समाणिआ ॥
(राग मलार, गुरु नानक)

उसने अपनी सृजना आप की है। उसने अपने आप को पहचाना है।
आकाश और धरती का बिछोड़ा दिखाने के लिये उसने स्वयं चंदोआ फैलाया है।
उसने बिना खम्बों के गगन को थाम लिया है। वह विवेक द्वारा तस्लीम होता है।
उसने सूरज और चाँद को बनाया और उसके अंदर उसकी ज्योत समाई है।
(राग मलार, गुरु नानक)

गुरु नानक ने कहा कि एकता के गुणों को अपनाने से ही महान साहित्यिक ज्ञान हासिल किया जा सकता है।

महाराज रणजीत सिंह के राज के दौरान कश्मीर के सनचालन जनरल हरी सिंह नलवा ने मटन के गुरूद्वारे को 'गुरु ग्रंथ साहिब' की हस्तलिखित बीड़ भेंट की थी जो अभी भी यहां संरक्षित है।

गुरु नानक और भाई मरदाना ने मटन से श्रीनगर का सफ़र किया।

गुरु नानक के पदचिन्हों पर अब हम मटन से श्रीनगर जा रहे हैं, जो पहले जम्मू-कश्मीर राज्य की ग्रीष्मकालीन राजधानी थी।

झेलम नदी के किनारे पर बसे श्रीनगर में मीठे पानी की झीलें हैं, जिनमें से डल झील सबसे प्रसिद्ध है।

भाई काहन सिंह नाभा ने ‘गुरशब्द रत्नाकर’ में ज़िक्र किया है कि गुरु नानक ने श्रीनगर की यात्रा के दौरान शंकराचार्य पहाड़ी पर बने शिव मंदिर में शिव मत के ‘जोगियों’ के साथ गोष्ट किया था।

यह मंदिर दो सौ ईसा पूर्व का बना हुआ है और ऐतिहासिक तौर पर जयथेश्वर मंदिर के नाम से जाना जाता है। दक्षिण भारतीय दार्शनिक आदि शंकराचार्य के आठवीं शताब्दी में आगमन के बाद यह शंकराचार्य मंदिर के रूप में मशहूर हो गया।

आदि शंकराचार्य 'अद्वैत वेदांत' के नुमाइंदे थे। 'वेदांत' के पैरोकार "अहं ब्रह्मासामी" में विश्वास करते हैं जिसका अर्थ है "मैं ब्रह्म हूँ"।

गुरु नानक भी 'अद्वैत' के प्रवक्ता थे, लेकिन उन्होंने वहदत का संदेश देने के लिये बेहद विनम्रता के साथ 'सोहं' शब्द का इस्तेमाल किया जिसके मायने हैं कि 'ब्रह्म का मेरे अंदर वास है।

सोहं आप पछाणीऐ सबद भेद पतीआइ ॥
गुरमुख आप पछाणीऐ अवर कि करे कराइ ॥
(सिरी राग, गुरु नानक)

जो ब्रह्मांडीय ऊर्जा की पहचान अपने अंदर कर लेते हैं
वह विवेक का भेद पा लेते हैं। रूहानी रूप से जागरूक मनुष्य
अपने-आप का अहसास कर लेते हैं। इसके बाद करने और समझने को क्या बचता है?
(सिरी राग, गुरु नानक)

चर्चा के लिए कुछ संकेतक

रूपक, गुरु नानक के कदमों की रुहानी छाप

एपिसोड १८: सुमेरू (चेतना)

चर्चा के संकेतक गुरु नानक की हिमालय और तिब्बत के माध्यम से हुई यात्रा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और दार्शनिक गहराई की खोज के लिए एक ढांचा प्रस्तुत करते हैं। उनके शारीरिक यात्रा और रुहानी संदेशों के बीच की परस्पर क्रिया का परीक्षण करके, हमें यह समझ में आता है कि भौगोलिक और सांस्कृतिक विविधता ने उनके सार्वभौमिक संदेश को कैसे प्रभावित किया। प्रश्न इस ओर विचार के लिए प्रेरित करते हैं कि गुरु नानक ने विभिन्न धार्मिक परंपराओं से किस प्रकार वार्तालाप किया, पारंपरिक प्रथाओं को कैसे चुनौती दी, और भौतिक संपत्ति, कर्मकांड, तपस्विता और अद्वैत पर वैकल्पिक दृष्टिकोण कैसे प्रस्तुत किए। उनकी यात्रा अंतर्धार्मिक वार्तालाप के प्रति एक गहन दृष्टिकोण को दर्शाती है जो रूढ़ियों की बजाय अनुभव आधारित ज्ञान, सामाजिक सहभागिता की बजाय संन्यास से दूरी, और दिव्य एकता की अभिव्यक्ति में विनम्रता पर बल देती है। लाहौर से कैलाश पर्वत तक के विविध परिदृश्यों में दिए गए उनके संदेश आज भी हमारे समकालीन संसार में धार्मिक और सांस्कृतिक विविधता को समझने के लिए बहुमूल्य अंतर्दृष्टियाँ प्रदान करते हैं।

ऐतिहासिक चर्चा संकेतक:

१. गुरु नानक की हिमालय क्षेत्र के माध्यम से दूसरी यात्रा की समय-रेखा और भौगोलिक विस्तार क्या था?

एपिसोड संकेत करता है कि गुरु नानक और भाई मरदाना ने अपनी दूसरी यात्रा लगभग सन् १५१७ ईस्वी में प्रारंभ की, जो ननकाना साहिब (तलवंडी) से शुरू होकर कई स्थानों से होकर गुज़री, जिनमें लाहौर, कीरतपुर, ज्वाला जी, बैजनाथ, पार्वती वादी, स्पीति वादी, शिपकी दर्रे को पार कर तिब्बत, सापरांग, कैलाश पर्वत, पैंगोंग झील, लेह, स्कार्दू, कारगिल, मटन और श्रीनगर शामिल हैं। यह विस्तृत यात्रा उन्हें कई राज्यों, विविध भू-भागों और आज की अंतरराष्ट्रीय सीमाओं के पार ले गई। यह कठिन यात्रा गुरु नानक के संदेशों और विभिन्न समुदायों के साथ उनके वार्तालाप को किस प्रकार प्रभावित कर सकती थी?

२. गुरु नानक द्वारा विभिन्न आस्थाओं से जुड़े पवित्र स्थलों की यात्राओं में हमें क्या महत्व दिखाई देता है?
एपिसोड दर्शाता है कि गुरु नानक की यात्रा विभिन्न धार्मिक स्थलों से होकर गुज़री, जिनमें ज्वालामुखी मंदिर और मार्तंड सूर्य मंदिर शामिल हैं। तिब्बत में बौद्ध साधकों के साथ उनके संपर्क और पीर बुढ़न शाह जैसे मुस्लिम संतों के साथ वार्तालाप अंतर्धार्मिक वार्तालाप के प्रति एक गहन प्रतिबद्धता को उजागर करते हैं, यह दर्शाते हुए कि सार्वभौमिक सत्य की खोज की कोई सीमा नहीं होती और उसमें सम्पूर्ण मानवता को एकजुट करने की शक्ति होती है। विभिन्न धार्मिक स्थलों की यात्राओं की यह प्रवृत्ति गुरु नानक की अंतर्धार्मिक समझ और सच्चे रुहानी संदेश के प्रति दृष्टिकोण के बारे में क्या प्रकट करती है?

३. ऐतिहासिक दस्तावेजों में अंतर को देखते हुए, गुरु नानक की विभिन्न स्थलों पर यात्राओं के वृत्तांत कितने विश्वसनीय हैं?
एपिसोड उन वृत्तांतों को उजागर करता है जो गुरु नानक की यात्राओं से जुड़े हैं, जैसे कि मणिकर्ण, लेह का गुरुद्वारा पत्थर साहिब, और कीरतपुर, जो प्रारंभिक 'जनमसाखियों' (हैजियोग्राफी) में उल्लिखित नहीं हैं। इतिहासकार इन मौखिक परंपराओं को सत्यापित करने के लिए कौन-कौन से पद्धतिगत दृष्टिकोण अपनाते हैं? उन स्थलों की व्याख्या हमें कैसे करनी चाहिए जहाँ विकसित होते वृत्तांत प्रमुख कहानियों को आकार देते रहे हैं?

४. सापरांग में गुरु नानक द्वारा देखे गए सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य के संदर्भ में गुगे साम्राज्य के ऐतिहासिक परिवर्तन क्या प्रकट करते हैं?
दस्तावेज़ गुगी साम्राज्य का वर्णन एक पिरामिड आकार की चट्टानी पहाड़ी पर स्थित बहु-स्तरीय बस्ती के रूप में करता है जो बाद में सत्रहवीं शताब्दी में रहस्यमयी रूप से विलुप्त हो गई। गुरु नानक की यात्रा के समय, यह क्षेत्र विभिन्न और नवीन विश्वास प्रणालियों तथा संस्कृतियों के सम्मिलन के परिणामस्वरूप एक रूपांतरण के दौर से गुजर रहा था। यह सांस्कृतिक संगम गुरु नानक के संदेश के लिए एक अद्वितीय अवसर कैसे प्रस्तुत कर सकता था?

दार्शनिक चर्चा संकेतक:

१. दुनी चंद के साथ गुरु नानक की भेंट ने भौतिकवाद और धन संचय की उनकी गहन समझ को किस प्रकार उजागर किया?
लाहौर में, गुरु नानक ने दुनी चंद को एक सुई दी और कहा कि इसे सुरक्षित रखें और मृत्यु के बाद साथ लेकर जाएँ। इस क्रिया ने यह दर्शाया कि संचय निरर्थक है, क्योंकि मृत्यु के बाद कुछ भी साथ नहीं

जाता। गुरु नानक ने एक सबद गाया जिसमें कहा गया कि चाहे किसी ने कितना भी धन और वैभव इकट्ठा कर लिया हो, अंततः सभी को मृत्यु का सामना करना पड़ता है। उन्होंने गहन चिंतन के धन की खोज को व्यक्त किया। यह वार्तालाप सच्चे धन और समृद्धि के विषय में गुरु नानक के वैकल्पिक दृष्टिकोण को किस प्रकार प्रकट करता है?

२. 'श्राद्ध' अनुष्ठान की आलोचना में गुरु नानक से कर्मकांड पर कौन से दार्शनिक दृष्टिकोण प्राप्त होते हैं?
जब गुरु नानक को 'श्राद्ध' में आमंत्रित किया गया — जो कि पूर्वजों की स्मृति में पुरोहितों को भोजन कराने का अनुष्ठान होता है — तो उन्होंने समझाया कि सच्चा श्रद्धांजलि पूर्वजों का सम्मान उनके जीवित रहते करना होता है। उन्होंने एक सबद गाया जिसमें कहा गया कि अनुष्ठान केवल चालाक युक्तियाँ हैं जो सच्चे इरादों को छिपाती हैं; परंतु सर्वव्यापी ऊर्जा सब कुछ जानती है। यह दृष्टिकोण उनके समय की पारंपरिक धार्मिक प्रथाओं के साथ-साथ हमारे युग की धार्मिक सोच को कैसे चुनौती देता है?

३. ज्वालामुखी मंदिर में अग्नि उपासना पर गुरु नानक की अंतर्दृष्टि प्रतीकात्मक बनाम वास्तविक रुहानी विचार पर उनके व्यापक दृष्टिकोण को कैसे दर्शाती है?
ज्वालामुखी मंदिर में, जहाँ अग्नि की पूजा होती है, यह कहा गया है कि गुरु नानक ने अग्नि को उस प्रतीक के रूप में देखा जो ज्ञान की ज्वाला से मन को प्रकाशित करने का प्रतीक है। उन्होंने एक सबद रचा जिसमें यह कहा गया कि उनका उद्देश्य नित्य चिंतन करना है और उन्होंने यह दर्शाया कि हमारे भीतर ही वह चेतना विद्यमान है जो सूर्य के प्रकाश के समान है। यह प्रतीकात्मक धार्मिक प्रथाओं के प्रति गुरु नानक के दृष्टिकोण को क्या दर्शाता है?

४. कैलाश पर्वत पर सिद्धों के साथ गुरु नानक के वार्तालाप से तपस्या के प्रति कौन-सा दार्शनिक दृष्टिकोण उभर कर आता है?
एपिसोड में उल्लेख किया गया है कि जहाँ सिद्ध समाज और परिवार से अलग होकर दिव्यता को प्राप्त करना चाहते थे, वहीं गुरु नानक का मानना था कि रुहानी ऊँचाइयाँ सामाजिक और पारिवारिक कर्तव्यों को निभाते हुए भी प्राप्त की जा सकती हैं। उन्होंने यह प्रश्न उठाया कि जब उनका ज्ञान समाज के लिए लाभकारी हो सकता है, तो वे एकांत में क्यों रहते हैं। यह दृष्टिकोण संसार से विरक्ति द्वारा रुहानी साधना की पारंपरिक अवधारणा को कैसे चुनौती देता है?

५. गुरु नानक चुनौतीपूर्ण धार्मिक विषयों पर सम्मानजनक वार्तालाप को कैसे प्रोत्साहित करते हैं?
कैलाश पर्वत पर, दार्शनिक वार्तालाप आरंभ करने से पहले, गुरु नानक और 'सिद्धों' ने एक-दूसरे को

नमन किया, जो सार्थक संवाद के लिए एक मूलभूत सिद्धांत को दर्शाता है। यह पारस्परिक सम्मान किसी भी बौद्धिक आदान-प्रदान या संभावित मतभेद से पहले एक सशक्त आधार तैयार करता है। इस वार्तालाप से हम आज के समय में सार्थक बैठकें और संवाद स्थापित करने के लिए कौन से सिद्धांत ग्रहण कर सकते हैं?

६. गुरु नानक की 'सोहम' की अवधारणा अद्वैत के प्रति एक विशेष दृष्टिकोण को किस प्रकार प्रकट करती है?

एपिसोड 'अहम् ब्रह्मास्मि' (मैं ही ब्रह्म हूँ) के अद्वैत वेदांत दर्शन की तुलना गुरु नानक की 'सोहम' (वह मुझमें वास करता है) की अवधारणा से करता है, जिसमें यह उल्लेखित है कि गुरु नानक ने एकता के सार को अत्यंत विनम्रता से प्रकट किया। अद्वैत को प्रकट करने के इस भिन्न दृष्टिकोण से कौन-कौन से दार्शनिक अर्थ और प्रभाव उत्पन्न होते हैं?

७. हिमालय की परिवर्तनकारी यात्रा के दौरान गुरु नानक के दर्शन की समझ को प्रकृति से संबंधित रूपकों द्वारा कैसे गहनता मिलती है?

एपिसोड में संपूर्ण रूप से गुरु नानक प्राकृतिक तत्वों का उपयोग अपने विचारों को प्रकट करने के लिए रूपकों के रूप में करते हैं। वे मानसरोवर झील के शांत जल को शांति और स्थिरता का प्रतीक बताते हैं, जबकि राक्षस झील के खारे जल को नकारात्मक गुणों का प्रतीक मानते हैं; जल में रत्नों की खोज करते हंस रुहानी ज्ञान की खोज का प्रतीक हैं। ये प्रकृति आधारित अंतर्दृष्टियाँ गुरु नानक के उस दर्शन को कैसे प्रकट करती हैं जो रुहानी ज्ञान को प्राकृतिक संसार के भीतर खोजने पर बल देता है?